Self Respect

01-09-2014

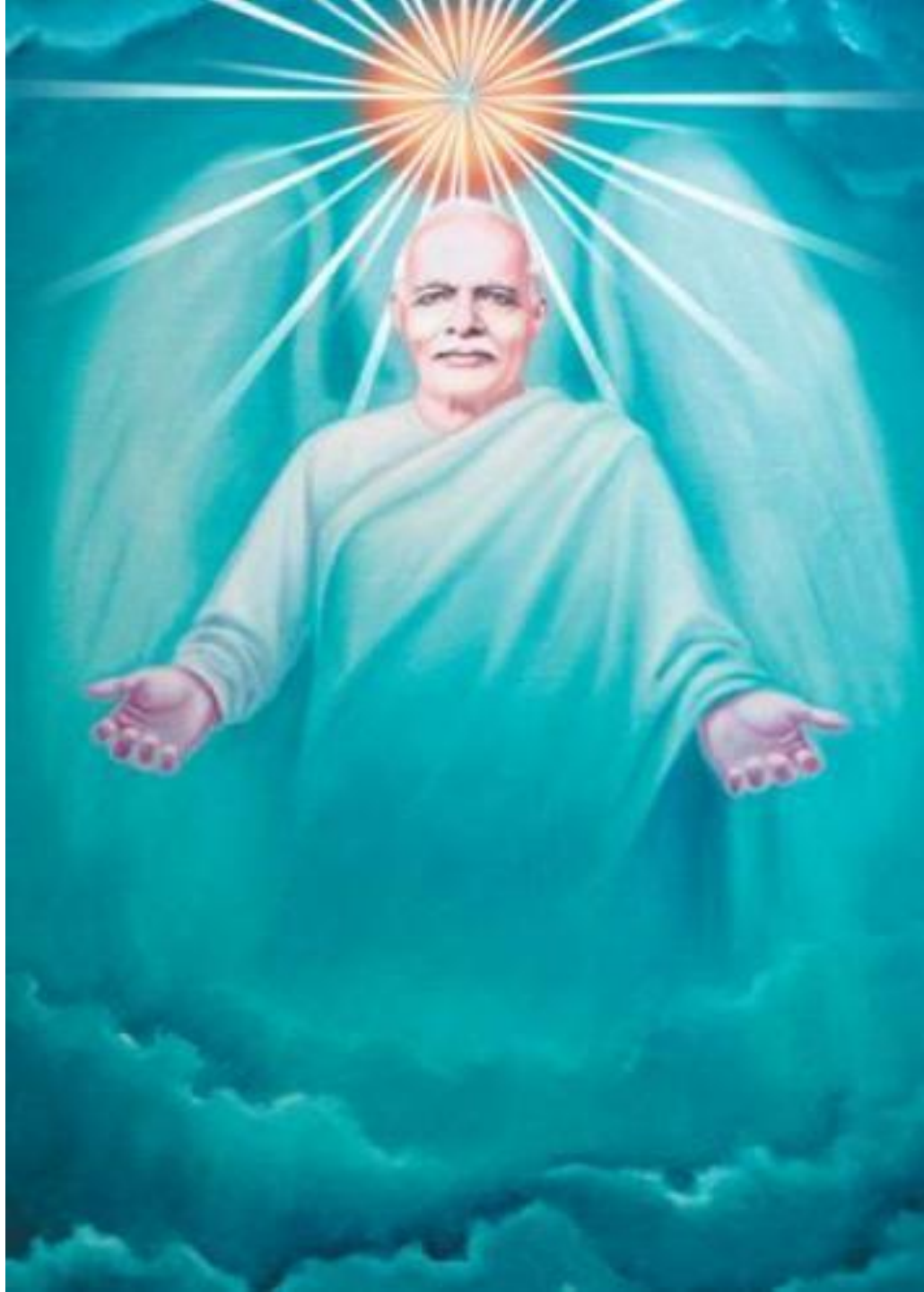

- ✓ अभी तुम बच्चे ही शान्तिधाम सुखधाम को जानते हो और कोई नहीं जानते । तुम बच्चों की बुद्धि में नॉलेज है-शान्तिधाम क्या है और सुखधाम क्या है । तुम सुखधाम में थे, अब फिर दु:खधाम में आये हो ।

- ✓ ज्ञान, विज्ञान, याद और ज्ञान के कितने बड़े जबरदस्त अस्त्र-शस्त्र हैं । सारे विश्व पर तुम राज्य करते हो । देवताओं को कहा जाता है अहिंसक ।

- ✓ अभी तुम बच्चों को मनुष्य से देवता बनने की शिक्षा मिल रही है । तुम जानते हो हम हर 5 हजार वर्ष के बाद बेहद के बाप से यह बेहद का वर्सा ले रहे हैं ।

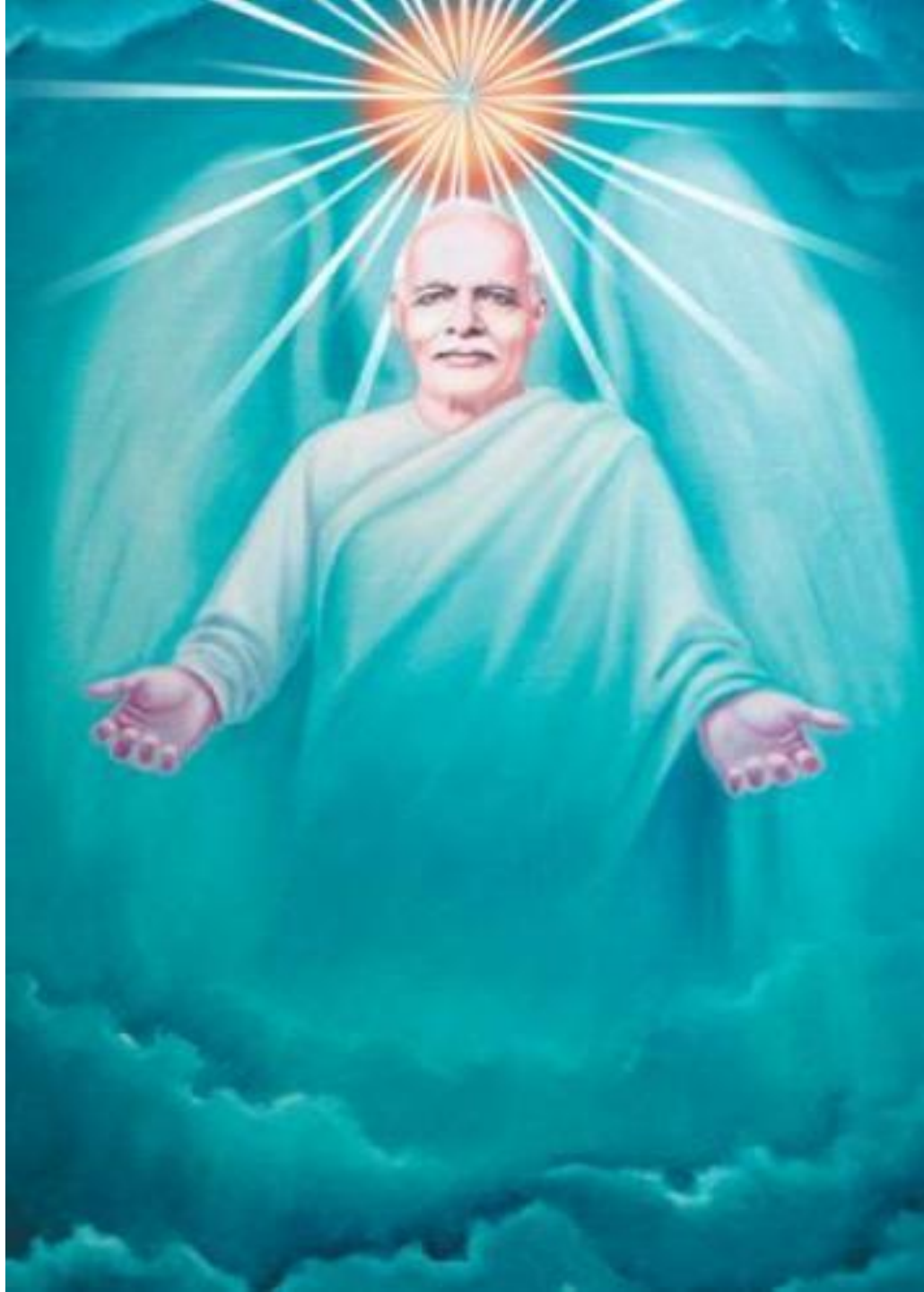

- ✓यह भी बुद्धि में रहे हम वहाँ रहते हैं, इस आकाश तत्व से पार, जहाँ सूर्य-चाँद भी नहीं होते । हम वहाँ के रहने वाले यहाँ पार्ट बजाने आये हैं । 84 का पार्ट बजाते हैं । सब तो 84 जन्म ले नहीं सकते । आहिस्ते-आहिस्ते ऊपर से उतरते आते हैं । हम आलराउंडर हैं । सब काम करने वाले को आलराउन्डर कहा जाता है । तुम भी आलराउन्डर हो । आदि से अन्त तक तुम्हारा पार्ट है ।

- ✓वह लोग तो कहते हम आत्मा सो परमात्मा हैं । उनको तो ड्रामा के आदि, मध्य, अन्त, ड्यूरेशन आदि का भी कुछ पता नहीं है । तुमको बाप ने समझाया है इस शरीर में तुम अभी ब्राह्मण हो । प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा शिवबाबा ने तुमको एडोप्ट किया है, पढ़ाते हैं, यह तो याद रहना चाहिए ना । बाप हमको पढ़ा रहे हैं । वह ऊंच ते ऊंच भगवान है ।

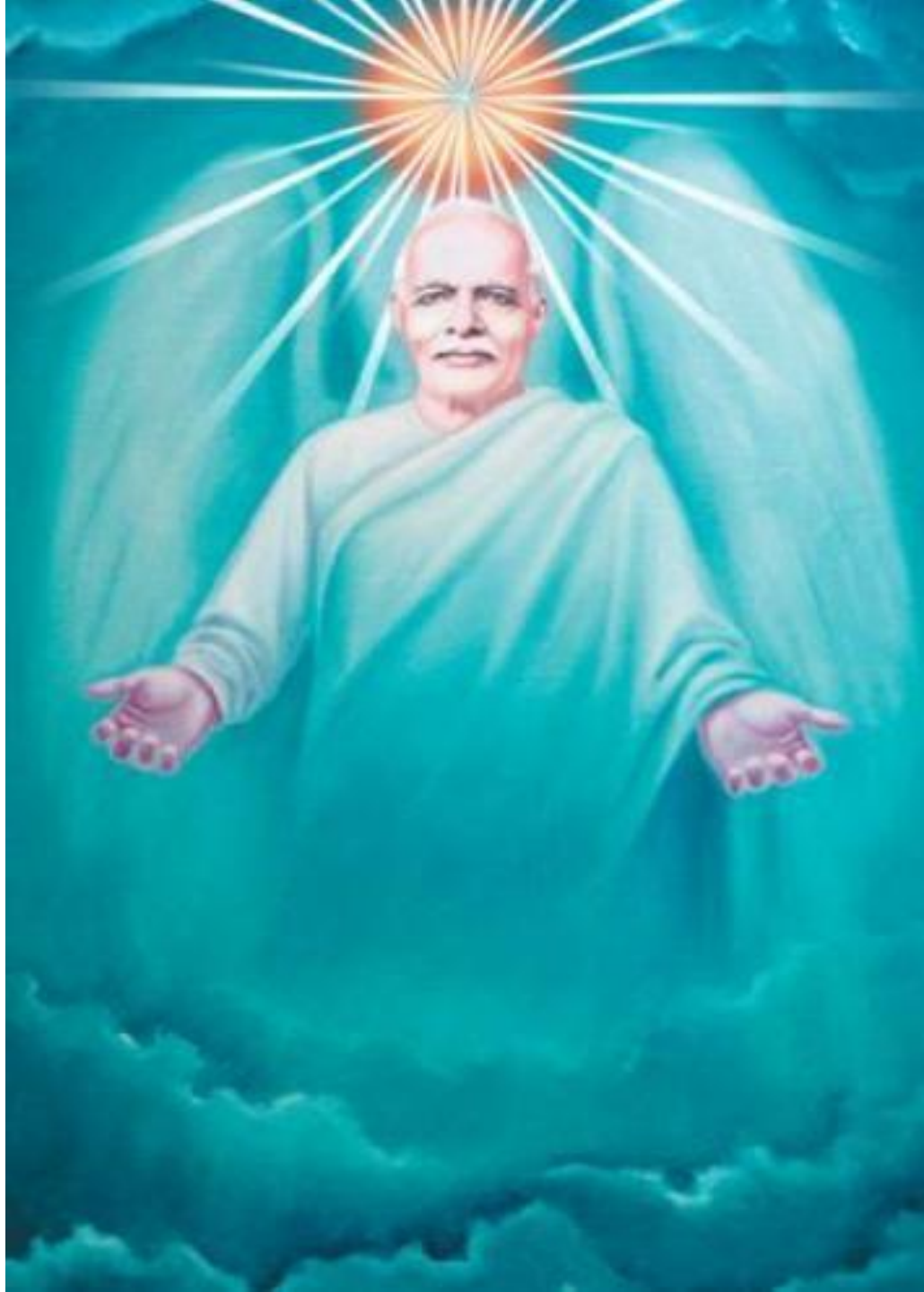

- ✓ अभी बाप ने समझाया है, यह वर्णों की बाजोली है । अभी फिर शूद्र से ब्राह्मण बने हो, ब्राह्मण से फिर देवता बनेंगे । विराट रूप दिखाते हैं ना । तुम्हारी बुद्धि में सारा ज्ञान है-कैसे हम नीचे उतरे फिर ब्राह्मण कुल में आये फिर डीटी डिनायस्टी में आये । अभी तुम ब्राह्मण हो चोटी । चोटी सबसे ऊंच होती है । तुम्हारे जैसा ऊंच कुल कौन कहलावे । भगवान बाप आकर तुमको पढ़ा रहे हैं । तुम कितने भाग्यशाली हो । अपने भाग्य की कुछ महिमा तो करो । बाहर में तो सब मनुष्य, मनुष्य को पढ़ाते हैं । यह तो है निराकार बाप । यह बाप कल्प-कल्प एक ही बार आकर नॉलेज देते हैं । पढ़ाई तो हर एक पढ़ते हैं ना । बैरिस्टर की नॉलेज पढ़कर बैरिस्टर बनते हैं । वह सब मनुष्य, मनुष्य को पढ़ाते आते हैं । अभी यह है भगवानुवाच ।

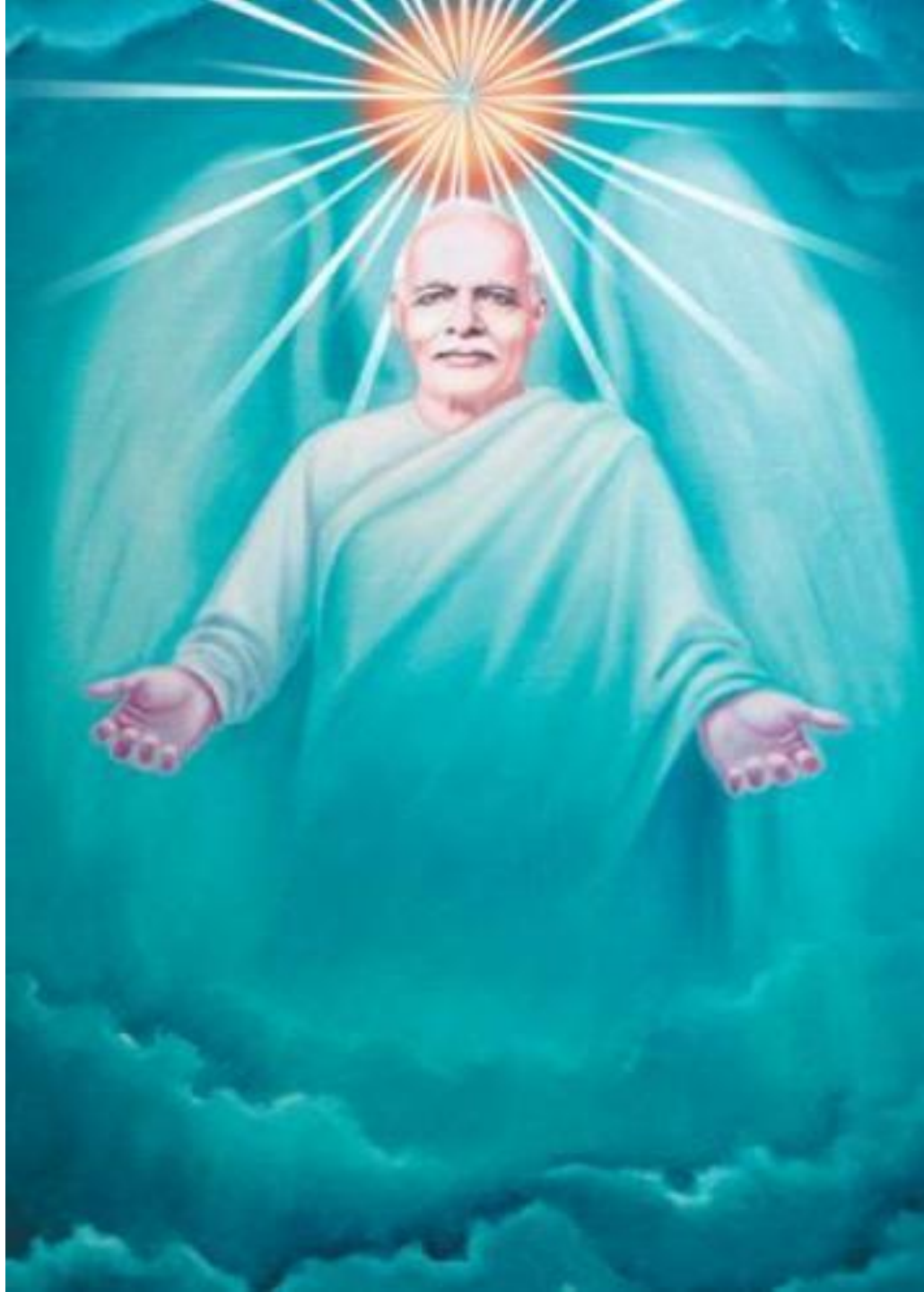

- ✓ रूहानी पण्डे तो तुम हो ना । सबको रूहानी घर का रास्ता बताते हो । वह है तुम आत्माओं का रूहानी घर । रूह जन्म लेकर पार्ट बजाती है । यह बातें तुम्हारे सिवाए और कोई नहीं जानते । ऋषि-मुनि आदि कोई भी न रचता को, न रचना के आदि-मध्य-अन्त को जानते हैं

- ✓ वजीर को वजीर, प्राइम मिनिस्टर को प्राइम मिनिस्टर कहेंगे । यह फिर है ऊंच ते ऊंच भगवान । सबसे बड़ा पोजीशन है निराकार बाप का, जिसके हम सब बच्चे हैं । वहाँ हम सब बाप के साथ परमधाम में रहते हैं । वह है घर ।

- ✓ अभी तुम जानते हो हम शुरू में देवता थे, फिर हम सो क्षत्रिय धर्म में आये अर्थात् सूर्यवंशी से चन्द्रवंशी में आये, इतने जन्म लिए-यह सब पता होना चाहिए ।

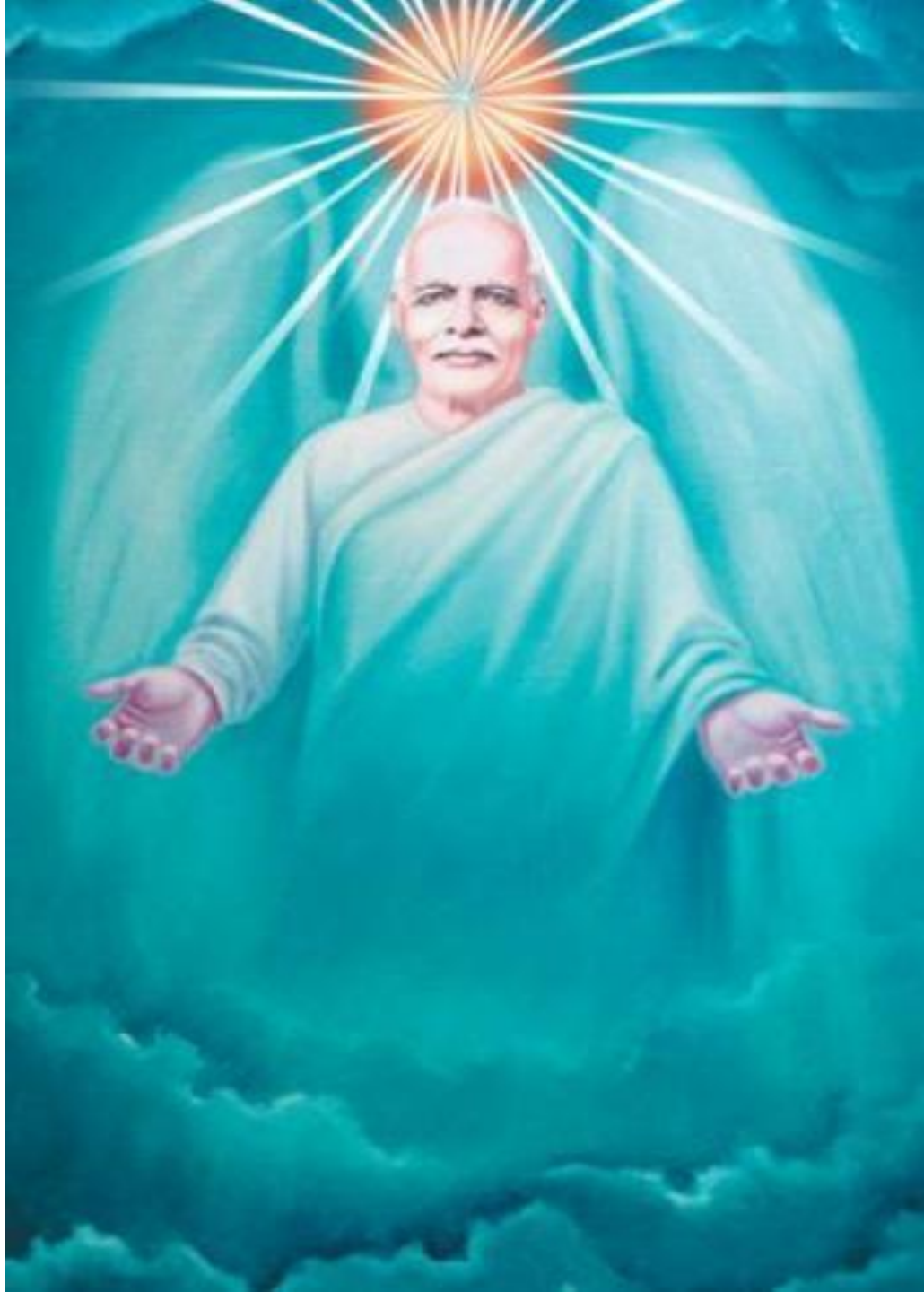

- ✓तुम बच्चों को तो सब समझा दिया है । चक्र पूरा हो फिर नये सिर शुरू होगा । अभी तुम पढ़ रहे हो । बाप को भी तुम जान गये हो । रचना को भी जान गये हो

- ✓ नॉलेज से कितना ऊंच पद मिलता है । यह है गीता पाठशाला । कौन पढ़ाते हैं? भगवान राजयोग सिखाते हैं अमरपुरी के लिए इसलिए इसको अमरकथा भी कहा जाता है । जरूर संगमयुग पर ही सुनाई होगी । जिन्होंने कल्प पहले पढ़ा है, वही आकर फिर पढ़ेंगे और नम्बरवार पद पायेंगे । तुम यहाँ कितने बार आये हो? अनगिनत

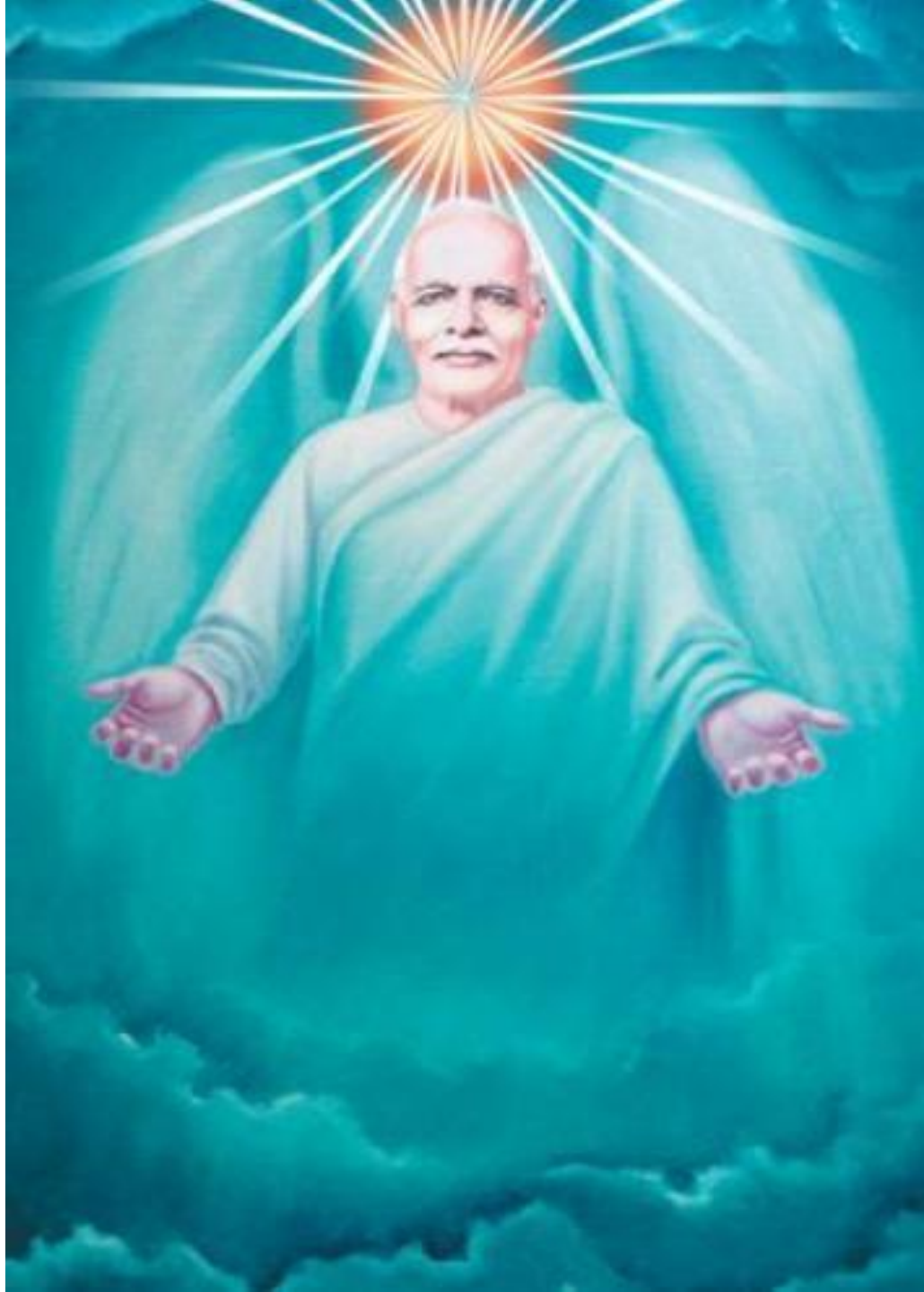

✓वे लोग तो शान्ति स्थापन करने की राय देने वालों को प्राइज देते रहते हैं । शिवबाबा तुमको सारे विश्व में शान्ति स्थापन करने की राय देते हैं । उनको तुम क्या प्राइज देंगे? वह तो और ही तुमको प्राइज देते हैं । लेते नहीं । यह समझने की बातें हैं

✓यहाँ तो बाप आकर डायरेक्ट तुमको पढ़ाते है । बाहर में तो फिर भी बच्चे पढ़ाते हैं ।

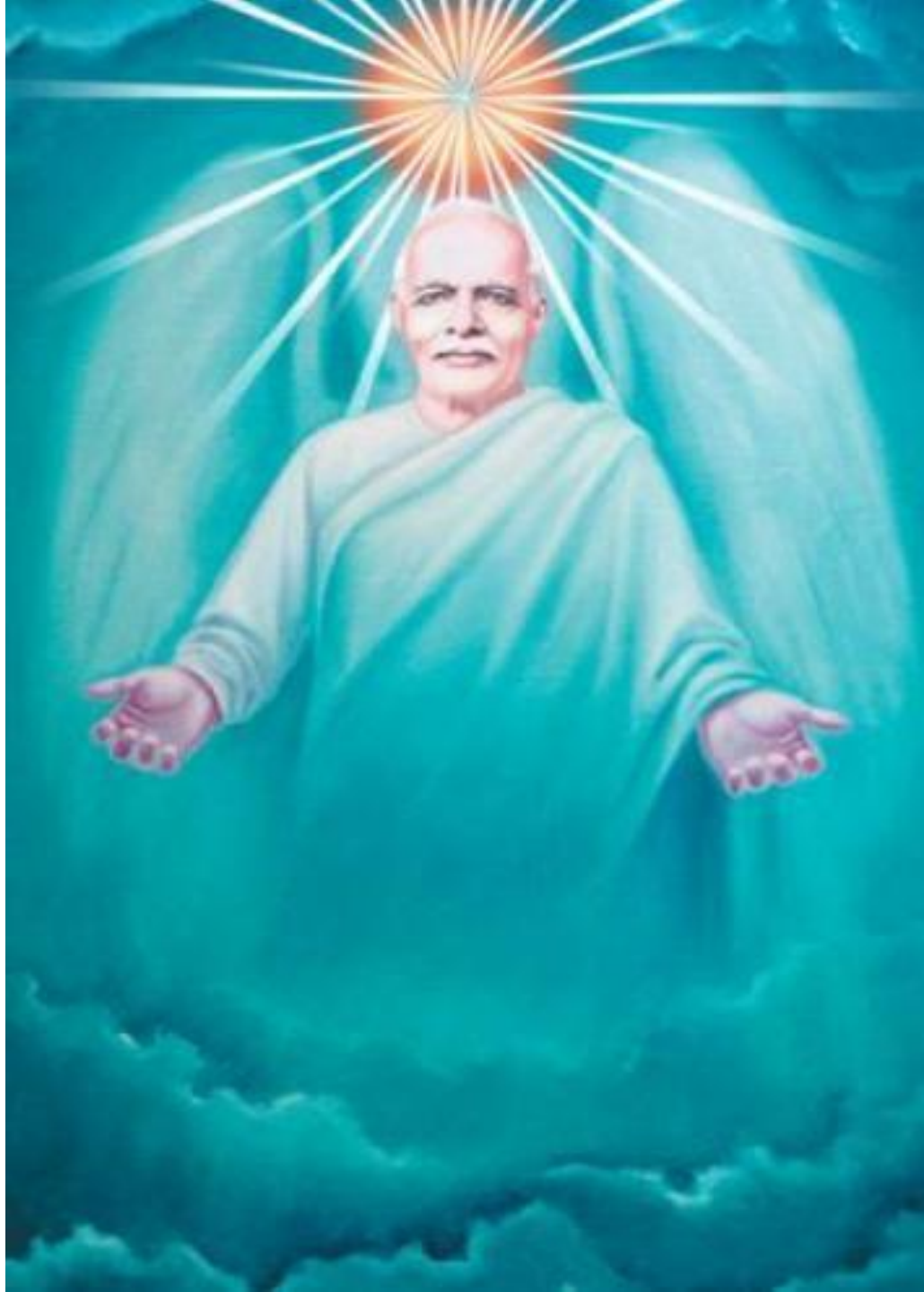

✓ दिन-प्रतिदिन तुम याद की यात्रा में पक्के होते जायेंगे । फिर तुमको कुछ भी याद नहीं आयेगा । सिर्फ घर और राजधानी याद आयेगी । फिर यह नौकरी आदि याद नहीं आयेगी । मरेंगे ऐसे जैसे बैठे-बैठे हार्टफेल होते हैं । दु:ख की बात नहीं । हॉस्पिटल आदि तो कुछ भी नहीं होंगे । बाप को जान लिया और स्वर्ग के मालिक बने । तुम्हारा तो हक है, सबका नहीं क्योंकि स्वर्ग में सब तो नहीं आयेंगे ना ।

✓ अच्छा! मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते ।

✓ वरदान: परिस्थितियों को शिक्षक समझ उनसे पाठ पढ़ने वाले अनुभवी मूर्त भव !